प्रकाशन तिथि : 15 जुलाई, 2023
प्रेषण तिथि : 19 जुलाई 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 09 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

(आलोक आश्रम और संघशक्ति में मनाई गुरु पूर्णिमा)

व्यष्टि से समष्टि और परमेष्टि का मार्ग बताने वाले पूज्य तनसिंह जी है प्रथम गुरुः संरक्षक श्री

पूज्य तनसिंह जी हमारे प्रथम गुरु हैं जिन्होंने हाथ पकड़ कर हमको इस रास्ते पर लगाया। व्यष्टि मार्ग से समष्टि मार्ग तक पहुंचाया और समष्टि मार्ग से आगे इंगित किया परमेष्टि मार्ग की ओर। यह साधना करते-करते हम अंततोगत्वा परमेश्वर से योग कर लेते हैं। परमेश्वर का दर्शन करना, परमेश्वर का स्पर्श करना, परमेश्वर में विलय होना, परमेश्वर के साथ योग होना, ये सब समानार्थी हैं। संतों ने कहा है कि मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। 84 लाख योनियों में से एक ही योनि ऐसी है मनुष्य की, चाहे वह स्त्री हो चाहे पुरुष हो, जो चाहे तो ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग पकड़ सकता है और चाहे तो गर्त में जा सकता है। अन्य सभी योनियां भोग योनि है लेकिन हम केवल भोगने के लिए नहीं आए हैं। हम इस जीवन की उच्चतम अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं और वह है ईश्वर की प्राप्ति। उसका मार्ग हमें पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में बताया। उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में गुजरात व राजस्थान से आए स्वयंसेवकों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कही। उन्होंने गुरु और गुरु पूर्णिमा का महत्त्व समझाते हुए कहा कि गुरु का अर्थ होता है अंधकार को मिटाने वाला, अंधकार को दूर भगाने वाला। न्यूनाधिक रूप से हमारे पाठशाला के शिक्षक आदि भी, जब हम वहां पढ़ने जाते हैं, हमारे अंधकार को मिटाते हैं लेकिन जो सद्गुरु होते हैं उनके पास चाहे जाओ, चाहे ना जाओ, वे सबका कल्याण करते हैं। पूर्णिमा का अर्थ है जो पूर्ण है। पूर्ण कौन है? पूर्ण परमेश्वर है और कोई पूर्ण नहीं है। अतः गुरु पूर्णिमा परमेश्वर की ही मनाई जाती है और माध्यम बनते हैं सद्गुरु। पूरे भारतवर्ष में आज के दिन गुरु पूर्णिमा धूमधाम से मनाई जा रही हैं। लोग अपने गुरु के चरणों में जाकर लाभान्वित होते हैं और जो वहां नहीं जा पाते, वे अपने स्थान पर ही बैठकर उन्हें स्मरण करते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ रूपी यज्ञ में देते रहें त्याग रूपी आहुतिः संघप्रमुख श्री

बंधुओं! आज हम तीन दिन के एक यज्ञ को शुरू करने के लिए और इस यज्ञ में आहुति देने के लिए यहां पर आए हैं। यह शिविर स्थान एक साधना स्थल है, पुण्य स्थल है, तीर्थ स्थल है और इस तीर्थ स्थल पर आने का पुण्य हमको तभी प्राप्त होगा जब यहां आने के बाद हम श्रद्धापूर्वक अपनी आहुति इस यज्ञ में डालेंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ स्वयं में एक यज्ञ है और कोई भी यज्ञ तब तक प्रज्वलित रहता है, तब तक दीप्तिमान रहता है जब तक इसमें घी, समिधा आदि के रूप में आहुति दी जाती रहती है। जैसे ही हमने आहुति डालना बंद किया, यज्ञ समाप्त हो जाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी एक अखंड यज्ञ है, जिसमें आहुति देने के लिए हम लोग आए हैं। जब तक त्याग रूपी आहुति इस यज्ञ में हम डालते रहेंगे तब तक संघ चलता रहेगा। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने चितौड़गढ़ में घोसुण्डा स्थित धोलेश्वर महादेव मंदिर में 7 से 9 जुलाई तक आयोजित प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हम सब लोग जानते हैं कि यज्ञ जब पूर्ण हो जाता है तो उसकी जो भस्म होती है, उसको सभी लोग अपने सिर पर लगाते हैं। इसका क्या कारण है? जिस सामग्री के जलने से यह भस्म बनी है, उस सामग्री को जलने से पहले कोई सिर पर नहीं लगाता। हम समझ सकते हैं कि जब कोई वस्तु किसी उद्देश्य के लिए अपना स्वयं का अस्तित्व समाप्त करती है, तो वह पवित्र बन जाती है। इसी प्रकार जो अपने ध्येय के लिए अपने आप को खपा देता है, जो अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, उसकी लोग पूजा करते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

EWS आरक्षण का विषय विधानसभा चुनावों में समर्थन व विरोध का आधार बनेगा

(श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने लिखा प्रदेश भाजपा के शीर्ष नेताओं को पत्र)

श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने आर्थिक आधार पर दिए आरक्षण में विद्यमान विसंगतियों को केन्द्र सरकार के स्तर पर दूर करने ले लिए प्रदेश भाजपा के शीर्ष नेताओं को पत्र लिख कर माननीय प्रधानमंत्री जी तक इस विषय को पहुंचाने का आग्रह किया है। पत्र में प्रधानमंत्री जी को आर्थिक आधार पर आरक्षण देने के लिए धन्यवाद देते हुए बताया गया है कि किस प्रकार श्री प्रताप फाउंडेशन का सहयोगी संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन 2019 से आर्थिक पिछड़े वर्ग के आरक्षण में व्याप्त विसंगतियों को हटाने के लिए प्रयासरत है। फाउंडेशन ने विभिन्न चरणों में विभिन्न कार्य योजनाओं के द्वारा इस विषय को बार-बार उठाया है

(शेष पृष्ठ 7 पर)

लाडनूं, जयपुर, बाली, पालनपुर व थराद में कार्ययोजना बैठकें संपन्न

लाडनूं

विभिन्न संभागों व प्रांतों में नवीन सत्र हेतु कार्ययोजना तैयार करने हेतु निरंतर बैठकें आयोजित हो रही हैं। इसी क्रम में 29 जून को श्री क्षत्रिय युवक संघ के लाडनूं प्रांत की प्रांतीय कार्ययोजना बैठक लाडनूं में आयोजित की गई। बैठक में वर्ष भर में होने वाले शिविर, शाखा, स्नेहमिलन, जयंतियां एवं पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त कार्यक्रम आयोजन के संबंध में चर्चा की गई एवं तदनुरूप दायित्व सौंपे गए। संभाग प्रमुख शिम्भुसिह आसरवा सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। पूर्वी राजस्थान संभाग की कार्ययोजना बैठक 8 जुलाई को जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों पर चर्चा की व स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे। पाली प्रांत में बाली स्थित अलख जी मंदिर में मारवाड़ जंक्शन व सोजत मण्डल की संयुक्त बैठक 9 जुलाई को आयोजित हुई। बैठक को संबोधित करते हुए पाली प्रांतप्रमुख महोब्बतसिंह धींगाणा ने

थराद

बताया कि 28 से 31जुलाई तक एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर क्षेत्र में रखा गया है जिसके लिए हमें संपर्क करना है। 30 जुलाई को श्रद्धेय नारायण सिंह रेड़ा की जयंती समारोह पूर्वक मनाने के संबंध में भी चर्चा हुई एवं आस-पास के 40 किमी के दायरे में आने वाले गांवों में संपर्क के लिए दल बनाए गए। बैठक में मण्डल प्रमुख बहादुर सिंह सारंगवास, नरपत सिंह बाली, शैतान

बाली

पालनपुर

सिंह बाली, हनुमान सिह भैंसाना ने भी अपने विचार रखे। मारवाड़ जंक्शन मण्डल प्रमुख महिपाल सिंह बासनी व अन्य सहयोगी भी बैठक में उपस्थित रहे। गुजरात में पालनपुर एवं थराद प्रांतों की अलग-अलग कार्ययोजना बैठक 9 जुलाई को आयोजित हुई। पालनपुर प्रांत की बैठक सरस्वती हाईस्कूल, ढुढियावाडी में एवं थराद प्रान्त की बैठक शैक्षणिक संकुल पीलुडा में संपन्न हुई। प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर एवं अरविंद सिंह नारोली ने उपस्थित स्वयंसेवकों से शाखाएं, शिविर, संपर्क यात्रा, जन्म जयंतियाँ, शताब्दी महोत्सव स्मारिका, कर्मचारी प्रकोष्ठ स्नेहमिलन, संघ साहित्य वितरण आदि विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करके वार्षिक कार्ययोजना तैयार की एवं उसके अनुसार दायित्व सौंपे।

सरदारशहर (चुरू) में स्नेहमिलन संपन्न

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चुरू जिले में सरदारशहर स्थित राजपूत छात्रावास में श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन 02 जुलाई को संपन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आज के समय में ऐसे कार्यक्रम हमारे आपसी स्नेह व पारिवारिक भाव को बढ़ाते हैं और सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं। उन्होंने सभी को पूज्य तनसिंह जी की 100वीं जयंती पर दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। सुमेर सिंह गुढ़ा ने बताया कि संघ द्वारा शिविर, शाखा आदि के माध्यम से समाज की भावी पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का सिंचन किया जा रहा है जिससे हम अपने स्वधर्म का पालन करते हुए जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। शेखावाटी संभाग प्रमुख खींव सिंह सुलताना ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया। राजवीर सिंह कंवलासर ने भी अपने विचार रखे। प्रांतप्रमुख किशन सिंह गोरिसर ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर छात्रावास में नियमित शाखा भी प्रारंभ की गई। गिरवर सिंह जालेऊ, महेंद्र सिंह परसनेऊ, मानसिंह पाबूसर, प्रदीप सिंह लुनासर, नरेंद्र सिंह तोगावास, पूर्व प्रधान भीकम सिंह, विक्रम सिंह बिल्लू, जितेन्द्र सिंह हाड़ा, महावीर सिंह हाड़ा, वीरबहादुर सिंह, जितेंद्र सिंह कोटडी, विक्रम सिंह पातलिसर, उम्मेद सिंह सोनपालसर, किशन सिंह किकासर, बहादुर सिंह सरदारशहर, भगवान सिंह राणासर, जीवराज सिंह भूकरका, भगवान सिंह मितासर, एडवोकेट दलीप सिंह, हनुमान सिंह राजासर, इंद्रसिंह आसासर, कमेर सिंह दुलरासर, दशरथ सिंह मितासर, नरपाल सिंह, सवाई सिंह कंवलासर, अनोप सिंह शिमला, उम्मेद सिंह सारसर सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त कार्यक्रमों के आयोजन की अगली कड़ी में 30 जुलाई को राजपूत छात्रावास तारानगर में स्नेहमिलन के आयोजन का भी निर्णय लिया गया।

उदयपुरवाटी (झुंझनूं) के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन

शेखावाटी संभाग में झुंझुनू के उदयपुरवाटी विधानसभा क्षेत्र में संघकार्य को गति प्रदान करने के उद्देश्य से 2 जुलाई से क्षेत्र के विभिन्न गांवों में संपर्क किया गया। यात्रा के दौरान ग्रामवासियों को पूज्य तनसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देकर पूज्य श्री रचित संघ-साहित्य वितरित किया गया। संघशक्ति व पथप्रेरक के सदस्य भी बनाए गए। यात्रा में छावसरी, नंगली, केड चवरा, किशोरपुरा, नेवरी, दीपपुरा, कंकराना, मंडावरा, छापोली, गिरावड़ी, मनकसास, वाघोली, सराय, सुरपुरा, पचलंगी, मावता गुड़ा आदि गांवों में संपर्क किया गया। संपर्क के दौरान इस क्षेत्र में शिविर आयोजित करने हेतु भी चर्चा की गई। जनवरी माह में दिल्ली में आयोजित हो रहे पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह हेतु सभी को निमंत्रण दिया गया। प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर, बाबू सिंह बेरसियाला, सुरेंद्र सिंह म्याजलार व नरपत सिंह बेरसियाला यात्रा में साथ रहे।

करीरी और दिवराला गांवों में की सम्पर्क यात्रा

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 2 जुलाई को जयपुर संभाग में करीरी और दिवराला गांव में संपर्क यात्रा की गई जिसमें ग्रामवासियों को जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी देते हुए बसों द्वारा दिल्ली पहुंचने की रूपरेखा बनाई गई तथा जन्म शताब्दी वर्ष की पताकाएं वितरित की गई। संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर, प्रांत प्रमुख राम सिंह अकदड़ा, मनोहर सिंह जालिमसिंह का बास और प्रवीण सिंह विजयपुरा यात्रा में सम्मिलित रहे। इस दौरान करीरी गांव में 23 से 26 सितंबर 2023 तक एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करना भी निश्चित हुआ। इसके लिए शिविर स्थल का अवलोकन भी संभाग प्रमुख द्वारा किया गया।

जोधपुर में रखी राजपूत बालिका छात्रावास की नींव

जोधपुर के सरदार क्लब परिसर में 29 जून को राजपूत कन्या छात्रावास की नींव रखी गई तथा भूमि पूजन हुआ। लगभग 6 करोड रुपए की लागत से बनने वाले इस वातानुकूलित छात्रावास का निर्माण मेघराज सिंह रॉयल द्वारा अपने पिता कल्याण सिंह शेखावत की स्मृति में करवाया जा रहा है। छात्रावास के लिए जमीन जोधपुर के पूर्व महाराजा गजसिंह की ओर से भेंट की गई है। छात्रावास में 150 बालिकाओं के रहने की व्यवस्था होगी। भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा, आईएएस शक्ति सिंह राठौड़, आशु सिंह सुरपुरा, रविंद्र सिंह भाटी, मोती सिंह जोधा, देवेंद्र सिंह सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

डेलासर में समारोह पूर्वक मनाई लोकदेवता हड़बू जी की जयंती

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 8 जुलाई को जैसलमेर जिले के डेलासर गांव में लोकदेवता हड़बू जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में स्थानीय समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे एवं हडबू जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। जैसलमेर संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राजस्थान की पवित्र धरा लोक देवताओं की कर्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहां के जनमानस में लोक देवताओं के प्रति प्रारंभ से ही अटूट आस्था रही है। इस भूमि पर ऐसी कई दिव्य आत्माओं का जन्म हुआ जिन्होंने न्याय के लिए आततायियों से युद्ध करने के साथ सामाजिक एकता, सांप्रदायिक सौहार्द, जीव रक्षा, मानव कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर कर क्षात्र धर्म का पालन किया। लोकदेवता हड़बूजी ऐसे ही महापुरुषों में से एक हैं। उन्होंने 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में आयोजित होने वाली पूज्य तनसिंह जी की 100वीं जयंती के अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का निवेदन किया। इतिहासकार व व्याख्याता तने सिंह काठा द्वारा लोकदेवता हड़बूजी का जीवन परिचय, उनकी वीरता के उदाहरण और उनकी पूरी वंशावली प्रस्तुत की गई। उन्होंने बताया कि हड़बू जी का जन्म परमार कुल में भूंडेल (नागौर) शासक मेहराज जी सांखला के घर ईस्वी सन् 1391 में भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष षष्ठी को हुआ। लोकदेवता के रूप में प्रतिष्ठित हड़बूजी सांखला इतिहास प्रसिद्ध शकुन विचारक, उदार और न्याय प्रिय सिद्ध पुरुष हुए। चांधन प्रांत प्रमुख उमेद सिंह बडोड़ा गांव के निर्देशन में सामूहिक यज्ञ किया जिसमें उपस्थित जनों द्वारा आहुतियां दी गई। कार्यक्रम में धायसर, सांखला, चांधन, दवाड़ा, मूलाना, बेंकटी, बडोड़ा गांव, राजमथाई, जेठा, भैरवा, तेजमालता, रामगढ़, सनावड़ा, चौक, म्याजलार आदि स्थानों से समाजबंधु शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन रतन सिंह बडोडागांव द्वारा किया गया। स्थानीय मठ के महंत महादेव पुरी का भी सान्निध्य रहा।

बिंझरवाली (बीकानेर) में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

बीकानेर जिले की लूणकरणसर तहसील के बिंझरवाली गांव में स्थित भोमियाजी मंदिर परिसर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 28 जून से 1 जुलाई तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए शक्ति सिंह आशापुरा ने शिविरार्थियों से कहा कि आज संसार में संक्रमण काल चल रहा है। आज के दूषित वातावरण में नैतिक गुणों का नित्य पतन हो रहा है और आने वाले समय में मानवीय मूल्यों और नैतिक गुणों वाले व्यक्तियों की आवश्यकता संसार को पड़ने वाली है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने इस आवश्यकता को पूरी करने के दुरुह कार्य का बीड़ा उठाया है। उन्होंने कहा कि संस्कार निर्माण एक दिन में करना संभव नहीं, इसके लिए सतत प्रयासों की आवश्यकता है। इसीलिए संघ में निरंतरता बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। शिविर में लूणकरणसर क्षेत्र के बिंझरवाली, सोढवाली, मुसलकी, मकड़ासर, किस्तूरिया, झंझेऊ, राजासर, पुन्दलसर, सेरूणा आदि गांवों तथा बीकानेर शहर के 110 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। फतेहसिंह मकड़ासर व नैनू सिंह बिंझरवाली ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के दौरान स्थानीय समाजबंधुओ का स्नेहमिलन भी आयोजित किया गया जिसमें संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

जयपाल सिंह जोधा की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

पाली जिले के बाली कस्बे में स्थित रंजन सराय सिरोया ग्राउंड में जयपाल सिंह जोधा की 16वीं पुण्यतिथि पर 28 जून को श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व राज्यसभा सांसद ओम माथुर ने जयपाल सिंह जोधा को जनता का सच्चा सेवक बताया। बाली विधायक पुष्पेंद्र सिंह राणावत, पूर्व मंत्री ओटाराम देवासी, पूर्व सांसद पुष्प जैन, नगरपालिका अध्यक्ष भरत चौधरी, उपजिला प्रमुख जगदीश चौधरी ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वर्गीय जोधा को श्रद्धांजलि दी। इससे पूर्व उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा जोधा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए गए। भूपेंद्र सिंह व तेजेंद्र सिंह जोधा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

स्प्रिंगबोर्ड संस्थान को मिला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

जयपुर के स्प्रिंगबोर्ड संस्थान को सिविल सेवा परीक्षा में अपने उत्कृष्ट परिणामों के आधार पर 'वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज' द्वारा दिल्ली में आयोजित 'वर्ल्ड एमएसएमई डे' के अवसर पर 'भारत में सिविल सेवाओं के लिए अग्रणी संस्थान' का सम्मान प्रदान किया गया। टोगो गणराज्य के भारतीय दूतावास में प्रभारी राजदूत के रूप में नियुक्त एडेम एकपेमाडो एवं वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज के कार्यकारी सचिव डॉ. संजीव लायक द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया। स्प्रिंग बोर्ड संस्थान की ओर से मुख्य प्रबंधक समिति के सदस्य विक्रमादित्य सिंह ने यह अवार्ड प्राप्त किया। संस्थान के निदेशक दिलीप सिंह महेचा ने कहा कि यह पुरस्कार 2006 से लेकर अब तक संस्थान से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति व पूरी स्प्रिंगबोर्ड टीम के कठिन परिश्रम का प्रतिफल है। उन्होंने यह पुरस्कार अपने संस्थान के उन विद्यार्थियों को समर्पित किया जो संस्थान में पढ़कर सिविल सेवा में चयनित हुए और आज राष्ट्र सेवा में लगे हुए हैं।

जयपुर में मासिक स्नेहमिलन का आयोजन

जयपुर शहर में रोड न. 17 पर स्थित सरस्वती बाल विद्या मंदिर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का मासिक स्नेहमिलन कार्यक्रम 9 जुलाई को आयोजित हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित सहयोगियों व समाजबंधुओ को श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया गया एवं दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी देते हुए उसमें सहभागी बनने का निमंत्रण दिया गया। जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

तिंवरी में राजपूत छात्रावास के निर्माण हेतु समिति का गठन

तिंवरी में राजपूत समाज के छात्रावास के भवन निर्माण को लेकर एक बैठक 9 जुलाई को आयोजित हुई जिसमें ग्यारह सदस्यीय भवन निर्माण समिति गठित की गई। पूर्व कैबिनेट मंत्री शंभू सिंह खेतासर व समिति के अध्यक्ष महेंद्र सिंह उम्मेदनगर अन्य समाजबंधुओं सहित बैठक में उपस्थित रहे। कमेटी के सदस्यों के रूप में जोग सिंह तिंवरी, जब्बर सिंह बड़ा कोटेचा, पदम सिंह बींजवाडिया, प्रवीण सिंह पांचला, नरेंद्र सिंह बालरवा, समुद्र सिंह तिंवरी, रामसिंह मांडियाई, हेम सिंह सिंधल, आईदान सिंह मालूंगा व मोहन सिंह भाटी को नवगठित समिति का सदस्य चुना गया। बैठक में उपस्थित समाजबंधुओं द्वारा छात्रावास निर्माण हेतु विभिन्न रूप में सहयोग की घोषणा भी की गई, साथ ही आगामी दिनों में तहसील के प्रत्येक गांव से एक दल बनाकर प्रत्येक घर से छात्रावास निर्माण हेतु सहयोग राशि एकत्रित करने का भी निर्णय लिया गया।

संपादकीय

समाज-चिंतन की अपरिहार्य आवश्यकताएं

हमारा समाज जागृत हो, एक हो, सबल और शक्तिशाली हो, हर क्षेत्र में सबसे आगे हो, यह समाज के सदस्य के रूप में हम सब की चाह रहती है। अपने समाज के प्रति हमारा रागात्मक संबंध, उसके प्रति अपनत्व का भाव हमारे भीतर स्वाभाविक रूप से ऐसी चाह उत्पन्न करता है। यह चाह हम विभिन्न माध्यमों से, विभिन्न स्थानों पर प्रकट भी करते रहते हैं, चाहे वह आपसी चर्चा में हो या चाहे सोशल मीडिया जैसे माध्यमों पर हो और ऐसा करते हुए हममें से अधिकांश का यही विचार और दावा होता है कि जो हम समाज के लिए चाहते हैं वह हो जाए तो समाज की समस्त समस्याएं हल हो जाएंगी लेकिन समाज हमारे दिखाए मार्ग पर चलता नहीं। लेकिन ऐसा करने से पहले क्या हम यह चिंतन करते हैं कि हमने अपने लक्ष्य को ठीक प्रकार से समझ लिया है अथवा नहीं? समाज के प्रति हमारी जिस चाह को हम प्रकट करते हैं क्या उस चाह का स्वरूप हमारे स्वयं के भीतर स्पष्ट है या नहीं? विचार करें, जब हम कहते हैं कि आज समाज को जागृत करने की आवश्यकता है, उस समय क्या हम यह जानते भी हैं कि समाज कौनसी नींद में सोया हुआ है जिससे उसे जगाना है? जब हम समाज को एक करने की बात करते हैं तो क्या हम यह जानते हैं कि एक होने के बाद समाज को करना क्या है? जब हम समाज को सबल और शक्तिशाली बनाने की बात करते हैं तब क्या शक्ति के विभिन्न स्वरूपों यथा - मनोबल, तपोबल, जनबल, साधन बल, अध्यात्म बल आदि पर भी हमारा चिंतन होता है अथवा मात्र भौतिक रूप से साधन-संपन्न होने को ही तो हमने शक्तिशाली होने का पर्याय मान लिया है? जब हम हमारे समाज को सबसे आगे देखना चाहते हैं तो वह अन्यों को पीछे रखकर अपने अहंकार को तुष्ट करने के लिए है अथवा स्वयं आगे बढ़कर अन्यों को भी आगे बढ़ाने का हमारा लक्ष्य है? इन सभी प्रश्नों पर गहनता से विचार करेंगे तो पाएंगे कि अधिकांश अवसरों पर जब समाज की जागृति, एकता, शक्ति और प्रगति की चाह व्यक्त की जाती है तो इनका स्वरूप चाह व्यक्त करने वाले के मन में ही स्पष्ट नहीं होता। इसी कारण से ये केवल थोथी बातें बनकर रह जाती है जिनका धरातलीय परिणाम शून्य ही होता है। अधिकांशतया ये बातें आत्मचिंतन और स्वयं पर जिम्मेदारी लेने से बचने के उपाय के रूप में ही प्रयुक्त की जाती हैं और हमारी प्रच्छन्न कायरता का प्रश्रय बनती हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस प्रकार की कायरता को स्वीकार नहीं करता, इसलिए वह अपने लक्ष्य को स्पष्टता से पहचानने की बात हमसे कहता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज को जगाने से पहले स्वयं जागने की बात करता है, एक होने से पहले नेक बनने की बात करता है, शक्ति के निर्माण के समानांतर उसे सतोगुणीय बनाने की प्रक्रिया भी जारी रखता है और अन्यों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के लिए स्वयं आगे बढ़ने का मार्ग सुझाता है। अतः हमें भी सर्वप्रथम समाज के प्रति अपनी चाह को, अपने लक्ष्य को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। समाज-संबंधी चिंतन में यह पहली आवश्यकता है।

लेकिन केवल चाह रखने से क्या कोई कर्म घटित होना संभव है? क्या किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चाह का होना मात्र पर्याप्त है? हम सब भलीभांति जानते हैं कि केवल चाहने से किसी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती, उसके लिए श्रम करना पड़ता है, कर्म करना पड़ता है, उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए निश्चित मार्ग तय करना पड़ता है। अतः यह विचार करना आवश्यक है कि क्या समाज के प्रति हमारी चाह पूरी करने के लिए हमारे पास कोई प्रक्रिया, कोई योजना भी है? क्या उस प्रक्रिया और योजना के सभी पक्षों को हमने जांच लिया है? क्या उस योजना के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक साधनों की उपलब्धता आदि पर हम चिंतन कर चुके हैं? इन प्रश्नों पर भी हमें गहराई से विचार कर लेना चाहिए। किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक निश्चित मार्ग का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ जब हम कहते हैं कि समाज में एकता की कमी है और समाज को एक होना चाहिए तब क्या हमारे चिंतन में उस एकता को लाने का कोई तरीका, कोई प्रणाली भी है अथवा हम यह समझते हैं कि केवल यह बताने भर से, कि समाज में एकता की कमी है, समाज एक हो जाएगा। यदि कोई ऐसा समझता है तो यह केवल बचपने भरी अपरिपक्वता है। वास्तव में तो यदि समाज को एक करना है तो उसके लिए एक जीवन्त संगठन खड़ा करना पड़ेगा जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचकर उसे अपने संगठन का सक्रिय अंग बना सके। फिर ऐसे संगठन के निर्माण के लिए भी कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं, कुछ निश्चित सिद्धांत और नियम होते हैं, मर्यादाएं होती हैं जिनके बिना ना तो एक जीवन्त संगठन निर्मित हो सकता है और ना ही स्थाई रह सकता है। इसलिए समाज के प्रति हमारी जो चाह है, उस चाह को क्रियान्वित करने के लिए, मूर्तरूप देने के लिए हमारे पास एक निश्चित प्रक्रिया का होना दूसरी आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस आवश्यकता को भी भली प्रकार समझता है और इसीलिए उसने समाज जागरण के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के रूप में एक निश्चित प्रक्रिया को अपनाया है जिससे वह एक-एक कड़ी जोड़ते हुए सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में बांधने वाले सर्वांगीण और जीवन्त संगठन का निर्माण कर सके और इस कार्य में वह धैर्य व दृढ़ता के साथ निरंतर लगा हुआ है।

लक्ष्य की स्पष्टता और निश्चित मार्ग की उपलब्धता की उक्त दोनों आवश्यकताओं के बाद भी एक तीसरी आवश्यकता और है जिसकी पूर्ति के अभाव में प्रथम दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति भी अपना महत्व खोकर निरर्थक हो जाती है। वह आवश्यकता है लक्ष्य तक पहुंचाने वाले निश्चित मार्ग पर चलने वाले पथिकों की; ऐसे व्यक्तियों की जो उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कीमत चुकाने को तैयार हों, जो लक्ष्यप्राप्ति हेतु सर्वस्व त्याग करने को तैयार हों। त्याग ही वह तीसरी और सर्वोपरि आवश्यकता है जो लक्ष्य और मार्ग की परिकल्पनाओं को व्यावहारिक धरातल पर साकार करने की क्षमता रखती है। जिनका लक्ष्य समाज को जागृत, संगठित, सबल और प्रगतिशील बनाना है, उन्हें स्वयं को वह लक्ष्य प्राप्त करने हेतु त्याग करने के लिए भी प्रस्तुत करना होगा। अतः यह भी देखना पड़ेगा कि समाज के प्रति हमारी उपरोक्त चाह को पूरी करने के लिए आवश्यक कीमत चुकाने को भी क्या हम तत्पर हैं या क्या वह कीमत चुकाने की हमारी क्षमता भी है? यदि क्षमता नहीं है तो क्या उस क्षमता को प्राप्त करने का संकल्प है? जो स्वघोषित समाजचिंतक यह अपेक्षा करते हों कि हम तो केवल लक्ष्य और मार्ग दिखाएंगे लेकिन उस पर चलने वाले लोग दूसरे हों, उस लक्ष्य के लिए त्याग दूसरे करें, तो ऐसे तथाकथित समाजचिंतक वास्तव में स्वार्थ और कायरता के मिश्रित पुतलों से अधिक कुछ नहीं हैं और समाज में किसी तरह का सकारात्मक परिवर्तन उनसे नहीं लाया जा सकता। किसी भी लक्ष्य के लिए कीमत चुकाने की क्षमता त्याग से ही जुटाई जा सकती है और त्याग कभी उधार नहीं मिलता। उसके लिए तो स्वयं को ही प्रस्तुत होना होगा और जब हम स्वयं त्याग करने को तत्पर होंगे तब हमारे लक्ष्य को अपना मानकर उसके लिए त्याग करने वाले साथी भी मिलना प्रारंभ हो जाते हैं। समाज जागरण जैसे महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवश्यक त्याग जुटाने का यही मार्ग है और श्री क्षत्रिय युवक संघ भी इसी मार्ग से उस त्याग को जुटा रहा है। अतः जब भी हम समाज के प्रति अपने चिंतन और अपनी चाह को व्यक्त करें तो समाज-चिंतन की उपरोक्त तीनों अपरिहार्य आवश्यकताओं की कसौटी पर अपने चिंतन को अवश्य परख लेना चाहिए और जब कोई अन्य भी समाज हित में कार्य करने या समाज के दिशा-दर्शन का दावा करता हो तो उसके जीवन को भी इन कसौटियों पर कसने और उस पर खरा उतरने के बाद ही उसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

मेवाड़ का गुहिल वंश

महाराणा रायमल के समय टोडा का सोलंकी राव सुरताण हरराजोत जिनसे टोडा का राज्य लल्ला खां पठान ने छीन लिया था, महाराणा रायमल की आश्रयता में बदनौर की जागीर प्राप्त कर परिवार सहित वहां रहता था। उनकी पुत्री तारादेवी के सौन्दर्य का हाल सुनकर कुंवर जयमल ने राव सुरताण को संदेश भेजा की आप अपनी पुत्री पहले मुझे दिखला दो तो फिर मैं उससे विवाह कर लूं। राव सुरताण ने कहा कि हमें आपका विवाह प्रस्ताव स्वीकार है लेकिन राजपूत कन्या विवाह से पूर्व दिखलाई नहीं जाती। इस पर कुंवर जयमल ने बदनौर पर चढ़ाई कर दी। अपने आश्रयदाता के पुत्र से युद्ध को अनुचित जान राव सुरताण अपने परिवार सहित बदनौर से चले गए। कस्बा खाली देखकर कुंवर जयमल ने सेना सहित राव सुरताण का पीछा किया और रात्रि के समय बदनौर से सात कोस दूर आकर सादा गांव के निकट राव सुरताण तक जा पहुंचा। अपनी बहिन के परिवार की मर्यादा रक्षा के लिए राव सुरताण के साले रतनसिंह सांखला ने जयमल की सेना में घुसकर जयमल को 'कुंवर जी, सांखला रतन का मुजरा पहुंचे' मार डाला और स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुआ। महाराणा रायमल ने सुरताण को बदनौर रहने के लिए ही कहा। राव सुरताण की पुत्री तारादेवी जो कि सुन्दर होने के साथ वीर भी थी ने घोषणा की कि जो वीर मेरी मातृभूमि टोड़ा को स्वतंत्र करवाए मैं उससे विवाह करूंगी। पृथ्वीराज ने उसके ये वीरता भरे विचार जानकर तारादेवी से विवाह किया और टोड़ा पर आक्रमण कर लल्ला खां पठान को मार कर टोड़ा का पठानों से स्वतंत्र करा उसे राव सुरताण को सौंप दिया। अजमेर के सूबेदार ने इस युद्ध में लल्ला खां की सहायता की थी, पृथ्वीराज ने उसे भी परास्त कर मार डाला और अजमेर के गढ़ पीठली पर अधिकार कर कुम्भलगढ़ लौट आया। महाराणा रायमल द्वारा सारंगदेव को भैंसरोडगढ़ की जागीर दी हुई थी, जिसे कुंवर पृथ्वीराज ने छीन लिया। इससे नाराज होकर सारंगदेव सूरजमल से जा मिला और उन दोनों के सहयोग के लिए मांडू के सुल्तान भी अपनी सेना के साथ आ पहुंचा, ये समाचार पाकर महाराणा रायमल भी उनका सामना करने चल पड़े। गंभीरी नदी के पास दोनों सेनाओं का भीषण संघर्ष हुआ, उस समय महाराणा का सैन्य बल कम होने के कारण पराजय होने वाली थी कि कुंवर पृथ्वीराज कुम्भलगढ़ सेना लेकर पहुंच गया और युद्ध का रंग ही बदल दिया और पराजय को विजय में बदल दिया। कालान्तर में सारंगदेव बाठरडे के देवी मंदिर में पृथ्वीराज के हाथों मारा गया और सूरजमल ने कांठल में जाकर नए राज्य की स्थापना की जो अब प्रतापगढ़ नाम से प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज की बहिन आनंदा बाई का विवाह सिरोही के राव जगमाल के साथ हुआ था, जो उसे दुःख देता था जिस पर एक रोज पृथ्वीराज सिरोही जा पहुंचा। पृथ्वीराज से भयभीत राव जगमाल ने वचन दिया कि वह आनंदा बाई को कभी दुख नहीं देगा। सम्मानपूर्वक सुख से रखेगा। वापिस लौटते पृथ्वीराज को राव जगमाल ने पाचन के लिए अच्छी बताकर विष से भरी गोलियां दी। सरल हृदय पृथ्वीराज ने वापसी में कुम्भलगढ़ के नजदीक पहुंच कर उनको चख लिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। **(क्रमशः)**

जारी है पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त कार्यक्रमों की श्रृंखला

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा विभिन्न स्थानों पर निरंतर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं। इसी क्रम में वागड़ प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन डूंगरपुर जिले की साबला तहसील के बिलुड़ा गांव के रावला परिसर में 28 जून को किया गया। प्रांतप्रमुख गुमान सिंह वालाई द्वारा संघ परिचय देते हुए आगामी 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी दी गई। दिग्पाल सिंह बिलुड़ा ने जयंती कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया। इस दौरान संघ साहित्य व जन्मशताब्दी की केसरिया पताकाएं वितरित की गई। नटवर सिंह, महेंद्र सिंह, गोविन्द सिंह, नारायण सिंह, नरपत सिंह, चंद्रपाल सिंह बिलुड़ा, गगनदीप सिंह वनवासा, हरी सिंह काका जी का गड़ा, उपेंद्र सिंह वालाई, कर्मवीर सिंह लांबापारडा सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ जिले में कपासन के बेणीपुरिया में रावला चौक में भी 2 जुलाई को विशेष शाखा आयोजित की गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया द्वारा हवन के पश्चात श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया गया। उपस्थित समाजबंधुओं को संघ साहित्य, यथार्थ गीता व पताकाएं उपलब्ध कराई गई। संघशक्ति, पथप्रेरक के सदस्य बनाए गए। दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी कार्यक्रम का निमंत्रण भी सभी को दिया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 2 जुलाई को ही चितौड़गढ़ के बड़का अमराणा में भी विशेष साप्ताहिक शाखा आयोजित की गई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने संघ परिचय के साथ ही श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन, श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में भी जानकारी दी। 2 जुलाई को अजमेर प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन श्री जगदम्बा छात्रावास, केकड़ी में किया गया। अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 2 जुलाई को ही डूंगरपुर जिले की साबला तहसील के वणवासा गांव स्थित रावला परिसर में भी विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन हुआ। जिले के भेखरेड गांव स्थित श्री कृष्ण मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। गुमान सिंह वालाई और टैंक बहादुर सिंह गेंहुवाड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चांदन प्रांत में झाबरा गांव के पास डेल्हा जी जसोड़ के प्राचीन स्मारक पर सामूहिक हवन का आयोजन 2 जुलाई को किया गया। मनोहरसिंह भैरवा ने बताया कि इस दौरान आगामी 24 सितंबर को जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत डेल्हाजी स्मृति दिवस समारोह का आयोजन करने का निर्णय कर प्रचार-प्रसार हेतु जिम्मेदारी सौंपी गई। इसी दिन मूलाना गांव में पीर चतर सिंह की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित हुई जिसमें सर्वसम्मति से तय हुआ कि पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 15 नवंबर को मूलाना में श्री पिथोरा स्मृति दिवस मनाया जाएगा। इसी प्रकार दवाड़ा गांव के प्राचीन सचियाय मंदिर में सचियाय शक्ति स्मृति दिवस, डेलासर में लोकदेवता हड़बूजी स्मृति दिवस, सोढाकोर में मिश्री सिंह भोमिया जी के मंदिर में और धायसर के आईनाथ मंदिर में कार्यक्रम आयोजित करने का भी निर्णय किया गया। अजमेर जिले में पुरानी केकड़ी के भान गोतान चौक स्थित अमराव बना की स्कूल में भी विशेष शाखा 9 जुलाई को संपन्न हुई।

जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त वडोदरा में किया संपर्क

मध्य गुजरात संभाग के सहयोगियों का एक दल 11 जुलाई को पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चलाए जा रहे संपर्क अभियान के तहत वडोदरा पहुंचा। सर्वप्रथम श्री कच्छ-काठियावाड़ राजपूत एसोसिएशन वडोदरा के कार्यालय में एक बैठक रखी गई जिसमें संस्थान के सभी कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत आयोजित होने वाले आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई एवं 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह के लिए सभी को आमंत्रित किया गया। तत्पश्चात वडोदरा में निवासरत वरिष्ठ समाजसेवी विक्रम सिंह महाराओल से भेंट की गई जिन्होंने वडोदरा जिला राजपूत समाज की आगामी बैठक में आने व इस विषय पर विस्तार से जानकारी देने का निवेदन किया। संपर्क दल द्वारा वडोदरा शहर के प्रथम नागरिक निलेशसिंह राठौड़ एवं अग्रणी उद्योगपति महेंद्र सिंह परमार से मुलाकात कर श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं उसकी शिक्षण पद्धति के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी, हितेंद्र सिंह (खोडा समाज अग्रणी साणंद), विजय सिंह (अध्यक्ष समस्त गुजरात राजपूत समाज- खेडा), नितिन सिंह भादरवा, दिग्विजय सिंह पलवाड़ा व जसवंत सिंह काणेटी इस संपर्क यात्रा में शामिल रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलखा हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

जागरण

श्रीपाल सिंह मादड़ी

प्रकृति इस संसार में प्रत्येक जीव को फलने और फूलने के समान अवसर देती है। लेकिन यह उस जीव को निश्चित करना होता है कि वह प्रकृति प्रदत्त उस अवसर का उपयोग अपनी क्षमताओं को बढ़ाने और गुणों को निखारने में करे या फिर भाग्य के भरोसे बैठकर अपने अस्तित्व को काल के गर्भ में जाता हुआ देखे।

कोई व्यक्ति जब रोगग्रस्त हो जाता है तब वह लाचार होकर नहीं बैठ जाता अपितु वह उस रोग से मुक्त होने के लिए हर संभव प्रयास करता है। यहाँ तक कि वह कड़वी औषधि लेने में भी कोई संकोच नहीं करता। हर कष्ट सहकर, अपनी इच्छाओं को मारकर दिन-रात केवल अपने रोग से मुक्त होने के यत्न-प्रयत्न करता रहता है क्योंकि वह पूर्व की भांति ही स्वस्थ होना चाहता है, बिस्तर से उठकर पुनः अपने कार्यक्षेत्र में लौटना चाहता है।

पिछली कुछ शताब्दियों से सैकड़ों विदेशी आक्रमणों से संघर्ष करने के दौरान हमारी कौम भी अनेक व्याधियों से ग्रस्त हो गई है। हमारे गुणों को कई दोषों ने जकड़ लिया है। हमारे ज्ञान चक्षुओं पर मोह, मद, अभिमान की पट्टियां पड़ गई हैं। संकीर्णताओं ने हमें यहाँ तक घेर लिया है कि पतन के मार्ग को ही हमने भ्रमवश उत्थान का मार्ग समझ लिया है। इन सभी रोगों से ग्रस्त होने के बाद भी हमारी कौम क्या कर रही है?

क्या वह इन रोगों से लड़ने का संघर्ष कर रही हैं? क्या वह व्याधियों से लड़ने के लिए पुरुषार्थ रूपी कड़वी औषधि को लेने की क्षमता रखती हैं? नहीं! वह ऐसा कुछ भी नहीं कर रही। उसने इन रोगों से ग्रस्त होकर खटिया पकड़ ली है। वह चाहती ही नहीं कि मैं अपने पैरों पर फिर से खड़ी होऊं, क्योंकि वह पुरुषार्थ ही नहीं करना चाहती। अपने पूर्वजों से प्राप्त भूमि, सम्मान, यश और कीर्ति का केवल भोग करना चाहती है, और कर रही है। इतने वर्षों में खटिया पर पड़े-पड़े यदि कुछ किया है तो वह यह कि उसने अपनी मूंछो की मरोड़ कम नहीं होने दी है। अपनी महान क्षत्रिय परम्परा में जन्मे पूर्वजों के कृतित्व से प्रेरणा लेने की अपेक्षा उनकी यशोगाथा के अभिमान में चूर-चूर हो गई है लेकिन उनके जैसा बनने और उनके सिद्धांतों पर चलने के लिए एक कदम उठाने तक का श्रम नहीं किया।

हाँ! इतने वर्षों में हमने यही सीखा है। हमनें एक महान कुल में जन्म तो पा लिया लेकिन अभी तक हमनें क्षत्रिय बनने का रत्ती भर भी प्रयास नहीं किया। इससे बढ़कर विधि की विडंबना और क्या हो सकती है कि हमने अपने पुत्रों को औरों की भांति एक अच्छा चिकित्सक, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी या अन्य सरकारी कर्मचारी और एक बेहतरीन व्यवसायी बनने की तो प्रेरणा दी और वर्तमान में इसकी आवश्यकता भी है लेकिन इससे भी जो हमारे लिए महत्वपूर्ण था वह यह कि हम उन्हें क्षत्रिय नहीं बना पाए।

जब तक हमारे पूर्वजों ने अपने पुत्रों को क्षत्रिय बनने की प्रेरणा देते रहे तब तक हमारे घरों से महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज, दुगार्दास राठौड़, पृथ्वीराज चौहान, जयमल-फत्ता जैसे अनेकों क्षत्रियों ने भारतीय जनमानस में अपने क्षत्रियोचित आचरण से यश और कीर्ति की पताका को फहराया। लेकिन जैसे ही हमने इस कार्य को वर्तमान की आवश्यकता महसूस न कर छोड़ दिया उसके पश्चात हमारी गौरवशाली परम्परा का अवसान होना प्रारम्भ हो गया और यह सांस्कृतिक अवसान हमारी कौम को इस मोड़ पर ले आया है जहाँ एक और समाज के पतन की गहरी खाई है तो वहीं दूसरी और अभी भी आशा की एक लौ जल रही है और वह है अपनी क्षात्र परम्परा में पुनः लौटने के लिए संघर्ष और कठिनाइयों भरा दुर्गम साधना पथ, श्री क्षत्रिय युवक संघ का साधना पथ।

क्या आज हम इस मोड़ पर कायरों की भांति जैसा हो रहा उसे ही अपनी नियति मानकर बहाव के साथ बहते जाएंगे या फिर उस पथ का चुनाव करेंगे जो साधना का पथ है, जिसमें केवल और केवल संघर्ष है, बाधाएं हैं लेकिन पतन कदाचित नहीं। परमेश्वर ने हमें अपने पूण्य प्रारब्ध कर्मों के फलस्वरूप एक गौरवशाली क्षात्र परम्परा में अपने नैसर्गिक कर्त्तव्यों और उद्देश्यों के साथ जन्म दिया है। अतः यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने परमपिता परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए अपने जन्म के साथ ही निश्चित हो गए कर्मों का पूरी निष्ठा से निर्वहन करने के लिए क्षत्रिय बनने का प्रशिक्षण ले। जिस प्रकार एक सैनिक बनने हेतु केवल सेना की परीक्षा उत्तीर्ण कर, प्रवेश पा लेना ही पर्याप्त नहीं है अपितु प्रवेश लेने के बाद सेना का कठोर से कठोरतम सैन्य प्रशिक्षण लेना अत्यावश्यक है, उसी प्रकार केवल राजपूत कुल में जन्म लेने मात्र से ही हम क्षत्रिय नहीं बन जाते अपितु अपने भीतर समाहित क्षत्रिय गुणों और संस्कारों जैसे शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, युद्धभूमि में पीठ नहीं दिखाना, दान देना और ईश्वरीय भावना को अपने आचरण में लाने के लिए हमें प्रशिक्षण की महत्ती आवश्यकता है और यदि यह प्रशिक्षण हमने अपनी पीढ़ी को बाल्यवस्था से ही देना प्रारंभ कर दिया तो यकीनन तरूणावस्था में ही वह इन गुणों और संस्कारों को आचरण में लाना प्रारम्भ कर देगी। आज पुनः समय की मांग है और हमें अपने नैसर्गिक कर्तव्यों की ओर लौटना ही पड़ेगा। कहावत है कि 'जब जागों तब सवेरा'। लेकिन यह बात मन को मनाने के लिए तो ठीक है लेकिन व्यावहारिक नहीं क्योंकि दोपहर में जागने वाला व्यक्ति स्वयं को यह सांत्वना तो दे सकता हैं कि चलो ठीक है! दोपहर ही तो हुई है, अभी तो बहुत समय शेष है। लेकिन वह भी जानता है कि मैंने व्यर्थ में ही सुबह से लेकर दोपहर तक का समय गंवा दिया जो मुझे फिर कभी प्राप्त नहीं हो सकता। हमारी कौम ने भी पिछले सैकडों वर्षों में बहुत कुछ गंवा दिया है और हमें इसे पुनः प्राप्त करने के लिए इससे भी अधिक समय लग सकता है। तो क्या हम प्रयत्न करना ही छोड़ दे? नहीं! हम ऐसा कदापि नहीं कर सकते अन्यथा भूत और भविष्य, दोनों के समक्ष हम मात्र उपहास के पात्र बनकर रह जाएंगे। हमें पूज्य तन सिंह जी द्वारा प्रदत्त इस संस्कारमयी साधना पथ को चुनना ही पड़ेगा। हम जानते है यह मार्ग सुगम नहीं है, इसमें निजी लाभ, सम्मान, पद और प्रतिष्ठा कुछ भी मिलने की सम्भावना नही है,और हम यह भी जानते है कि हमें इस कार्य को साध्य तक ले जाने के लिए बार-बार जन्म लेना होगा। न जाने कितनी पीढ़ियों को अपना सर्वस्व समर्पण करना होगा। लेकिन हमें यह भी स्मरण रखना है कि हम भी उस भगीरथ की वंशपरम्परा के वाहक हैं जिन्होंने अपने पूर्वजों के संकल्प को धारण कर, अपना सम्पूर्ण जीवन तपस्या में तपाकर अन्ततः मां गंगा को धरती पर ले ही आए।

उसी प्रकार हम भी इस दुर्गम साधना पथ को स्वीकार करेंगे, सृष्टि के आदि से लेकर पिछले कुछ वर्षों तक हमारे पूर्वज इसी साधना पथ को स्वीकार करते आए हैं। अतः मन में कृतसंकल्प होकर अपने आत्मबल की प्रेरणा से अपने ईष्ट का ध्यान कर ,आज से ही हम स्वयं को क्षात्र धर्म की अनुपालना में इस साधना पथ की ओर अग्रेषित करें और हमारी आने वाली संततियों को भी इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहे। विजय निश्चित होगी क्योंकि धर्म के साथ श्री भगवान और उनके साथ विजय रहती है और श्री क्षत्रिय युवक संघ का यह साधना मार्ग, ईश्वरीय मार्ग है जो स्वयं भगवान कृष्ण ने गीता में हमारे लिए कहा है। जो व्यष्टि से समष्टि की ओर तथा समष्टि से परमेष्टि की ओर ले जाने वाला बताया है।।

।।जय संघ शक्ति।।

दीपिका सिंह ने प्राप्त की नीट परीक्षा में सफलता

जैसलमेर जिले के बडोडागांव निवासी दीपिका सिंह पुत्री जालम सिंह भाटी (सहायक कमांडेंट, सीआरपीएफ) ने नीट 2023 परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए अखिल भारतीय स्तर पर 3109वीं रैंक प्राप्त की है।

गार्गी उदावत ने प्राप्त किए 95 प्रतिशत अंक

पाली जिले के खिंवाड़ा गांव की निवासी गार्गी उदावत पुत्री गोपाल सिंह उदावत ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं (कला वर्ग) की परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

वैरावत क्षत्रिय विकास सेवा समिति रानीखुर्द की कार्यकारिणी ने ली शपथ

वैरावत क्षत्रिय विकास सेवा समिति रानीखुर्द की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण व अभिनंदन समारोह छोटी रानी में 7 जुलाई को संपन्न हुआ। कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व सदस्यों ने अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की शपथ ली। समिति के संरक्षक विशन सिंह राठौड़, भीम सिंह राठौड़, शैतान सिंह राठौड़, अध्यक्ष विक्रम सिंह राठौड़, उपाध्यक्ष संग्राम सिंह राठौड़, कोषाध्यक्ष अमर सिंह राठौड़, सचिव नाथु सिंह राठौड़, कार्यकारिणी सदस्य अनोप सिंह राठौड़, गणपत सिंह राठौड़, नरपत सिंह राठौड़, पदम सिंह राठौड़, गोविन्द सिंह राठौड़ , विक्रम सिंह राठौड़ व महावीर सिंह राठौड़ ने शपथ ग्रहण की। केसर सिंह राठौड़, रतन सिंह राठौड़ व अन्य उपस्थित समाजबंधुओं ने नजवगठित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का सम्मान किया।

जोधपुर विश्वविद्यालय में मिहिर भोज शोधपीठ की अनुशंसा

जोधपुर स्थित जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में मिहिर भोज शोध पीठ की स्थापना पर निर्णय हेतु विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा नियुक्त समिति द्वारा 5 जुलाई को आयोजित सिंडीकेट बैठक में शोधपीठ स्थापित करने की अनुशंसा की गई। इस शोधपीठ की मांग लंबे समय से छात्रों, विभिन्न संगठनों एवं समाजबंधुओ द्वारा की जा रही थी। कुछ समय पूर्व छात्र नेता रघुवीर सिंह बेलवा ने सर्व समाज के युवाओं के साथ मिलकर राज्यपाल से मुलाकात की और उन्हें इस मांग से अवगत करवाया। विश्वविद्यालय के छात्र संघ के सभी पदाधिकारियों व विभिन्न छात्र संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त रूप से कुलपति को इस संबंध में ज्ञापन भी सौंपा गया था। श्री प्रताप युवा शक्ति सहित अन्य संगठनों द्वारा भी विश्वविद्यालय प्रशासन को पत्र लिखकर इस संबंध में मांग रखी गई थी। इसके पश्चात विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा डॉ. महेंद्र सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया। समिति द्वारा मिहिर भोज शोधपीठ की अनुशंसा किए जाने पर छात्रों ने जेएनवीयू के पुराना परिसर के मुख्य द्वार पर एकत्रित होकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार जताया। इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री जसवंत सिंह इंदा, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रविंद्र सिंह राणावत सहित अनेकों छात्र उपस्थित रहे।

डॉ. मनिंदर सिंह भीमगढ़ बने बीएसएफ में मेडिकल ऑफिसर

बांसवाड़ा जिले के भीमगढ़ निवासी डॉ. मनिंदर सिंह सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) में चिकित्सा अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए हैं। भारत बांग्लादेश सीमा पर असम के पनबरी धुबरी में पदस्थापित मनिंदर सिंह ग्रामीण परिवेश से आते हैं और उन्होंने सरकारी विद्यालय से अपनी शिक्षा प्राप्त की है। इनके छोटे भाई गजेंद्र पाल सिंह भी मेधावी छात्र है जिन्हें अमेरिका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है।

विक्रम सिंह दौलतपुरा का नेट जेआरफ परीक्षा में 18वां स्थान

(पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवनदर्शन एवं विचारधारा पर कर रहे हैं पी.एच.डी.)

विक्रम सिंह दौलतपुरा ने इस वर्ष आयोजित यूजीसी नेट जेआरफ परीक्षा में 99.89 पर्सेंटाइल हासिल कर अखिल भारतीय स्तर पर 18वां स्थान प्राप्त किया है। राजस्थान विश्वविद्यालय के शोध छात्र विक्रम सिंह द्वारा इतिहास विषय में 'तनसिंह का राजस्थान की सामाजिक एवं राजनैतिक जनजागृति में योगदान' विषय पर पी. एच. डी. भी शोध निर्देशक प्रोफेसर कुलवंत सिंह शेखावत के निर्देशन में की जा रही है। इस विषय पर शोध हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा उन्हें 5 वर्ष तक फैलोशिप भी उपलब्ध करवाई जाएगी। विक्रम सिंह एन.सी.सी. और खेलकूद गतिविधियों में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उल्लेखनीय है कि विक्रम सिंह दौलतपुरा संघ के स्वयंसेवक है और इन्होंने बाल्यावस्था से ही संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति, जयपुर में रहते हुए अपनी पढ़ाई की है। विक्रम सिंह वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदान सिंह दौलतपुरा के पौत्र है। इनके पिता महेंद्र सिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं।

कुलदीप सिंह ओडिंट को पितृशोक

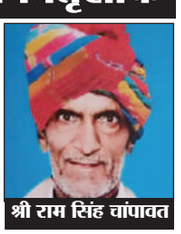

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक कुलदीप सिंह ओडिंट के पिता **श्री राम सिंह चांपावत** का देहावसान 04 जुलाई 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

श्री राम सिंह चांपावत

(पृष्ठ एक का शेष)

ईडब्ल्यूएस...

एवं केंद्र सरकार तक अपनी आवाज पहुंचाने के प्रयास किया है, पर केंद्र सरकार में अभी भी आय के साथ संपत्ति संबंधी शर्तें लागू हैं जिनके कारण आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों को आरक्षण का लाभ नहीं मिल पा रहा है। पत्र में लिखा है कि यह आर्थिक पिछड़ो के भविष्य का प्रश्न है और इसे लेकर पूरा अनारक्षित वर्ग गंभीर है। आपकी पार्टी की इस विषय मे उदासीनता को लेकर समाज के लोग विभिन्न माध्यमो से रोष प्रकट करते हैं। आगामी विधानसभा चुनावों में यह विषय भी

किसी पार्टी को समर्थन व विरोध का आधार बनेगा, अतः समय रहते इन विसंगतियों को दूर किया जाए।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सहयोगियों द्वारा सर्वप्रथम यह पत्र 5 जुलाई को राजस्थान भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश जोशी को प्रदेश भाजपा कार्यालय में जाकर दिया गया। इस पत्र के साथ श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा विगत दिनों अभियान चलाकर 550 भाजपा नेताओं से जुटाये समर्थन पत्र व उनकी सूची, विगत वित्तीय वर्ष में राजस्थान में केन्द्र व राज्य के नियमों से बने EWS पात्रता प्रमाण पत्रों के जिलावार व तहसीलवार तुलनात्मक आंकड़ें व माननीय प्रधानमंत्री जी को भेजे गये ज्ञापन की प्रति भी सौंपी गई। 7 व 8 जुलाई को बीकानेर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे से पहले विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह राठौड़, राजस्थान भाजपा के प्रभारी व राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, उप नेता प्रतिपक्ष सतीश पुनिया को भी पत्र सौंपा गया। इनको भी पत्र के साथ प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन, तहसील व जिलेवार केंद्र व राज्य स्तर पर बने पात्रता प्रमाण पत्रों के आंकड़े, सहमति पत्र प्रदान करने वालों की सूची सहित पूरी पत्रावली माननीय महावीर सिंह जी के प्रतिनिधि के रूप में फाउंडेशन के सदस्यों द्वारा दी गई। संबंधित से निवेदन किया गया कि वर्तमान स्थिति में राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा जारी प्रमाण पत्रों का अनुपात 70/30 का है जिससे आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग को आरक्षण का लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसी विषय को लेकर भारतीय जनता पार्टी के 550 पार्टी पदाधिकारियों व जनप्रतिनिधियों द्वारा अपना समर्थन एवं सहमति पत्र दिया जा चुका है। इससे पूर्व भी फाउंडेशन ने प्रदेश में 1000 से अधिक सरपंचों के माध्यम से समर्थन एवं सहमति पत्र प्राप्त कर प्रधानमंत्री को मेल करवाये गये, जिला एवं तहसील टीमों द्वारा प्रदेश में 218 जगहों पर कलेक्टर एवं उपखण्ड कार्यालयों में भी ज्ञापन सौंपे जा चुके हैं। सभी ने विषय को गंभीरता से सुना एवं सहयोग का आश्वासन भी दिया।

व्यष्टि से...

हम भी ऐसा ही एक उपक्रम कर रहे हैं। गुरु के पास आने के बाद भी यदि कोई अंधकार रह जाता है तो वह गुरु का दोष नहीं है, कहीं ना कहीं हमारी निष्ठा में, हमारी श्रद्धा में अंतर रहा है। हृदय की निर्मलता, अंतःकरण की निर्मलता हम रख नहीं पाते हैं तो वह अंधकार दूर नहीं होता है। लेकिन गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो इस मार्ग पर चल पड़ा है वह यदि दो कदम भी चला है तो अगले जन्म में उसको वही मार्ग मिल जाता है। इतना बड़ा आश्वासन गीता के अतिरिक्त कोई ग्रंथ नहीं देता। हम भाग्यशाली हैं कि ऐसी गीता को, यथार्थ गीता को पढ़ने का हमको अवसर मिला और उसी से प्रेरित होकर के हम गुरु पूर्णिमा मनाते हैं।उन्होंने कहा कि आप सब लोग यहां आए हैं तो आपको भी भगवान ही यहां पर लेकर के आया है प्रेरक बन करके और वही हमको मार्ग दिखाएगा। बस हम भगवान का स्मरण करते रहें।

आप राम का नाम लेते हैं तो भी अच्छा है, शिव का नाम लेते हैं तो भी अच्छा है, कृष्ण का नाम लेते हैं तो भी अच्छा है लेकिन शास्त्रों में आदेश ओम का जाप करने का है। महिलाएं भी अपनी गृहस्थी का कार्य करते हुए धीरे-धीरे ओम का जप करती जाएं, यही आपकी उपासना है। इससे पूर्व संरक्षक श्री ने स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज व पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर तिलक लगाकर अर्चना की व स्वयंसेवकों सहित उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर जयपुर में संघशक्ति में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सामान्यतया जो हमें विद्यालय में पढ़ाते हैं, उनको ही हम गुरु मानते हैं लेकिन असल में जो ज्ञान हमको ईश्वर तक पहुंचाता है वह ज्ञान ही वास्तव में सार्थक है और वह ज्ञान देने वाला ही सच्चा गुरु है। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही गुरु हैं। तनसिंह जी ने कहा कि - ₹गुमराह हठीलों के प्रांगण में मैं अलख जगाने आया हूं।₹ कैसा है हमारा समाज? गुमराह तो है ही, हठीला भी है। उनको यदि सही मार्ग बताने का प्रयास किया जाए तो भी मानते नहीं है क्योंकि अपनी जिद पर अड़े हैं। और केवल एक दो हठीले नहीं, बल्कि पूरा समाज सोया पड़ा है। उसको जगाने का अर्थ केवल नींद से जगाना नहीं है। जगाने का अर्थ है समाज को अपने भूले हुए कर्तव्य का पालन करना सिखाना। कर्तव्य पालन करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। इसलिए पूज्य तनसिंह जी ने कहा है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वर की उपासना है क्योंकि संघ में हमको वह बातें सिखाई जाती हैं जो हमारे जीवन को सार्थक बना सके। ऐसे महत्वपूर्ण काम में हमको जिसने लगाया है वह गुरु हमारे लिए पूजनीय है। गुरु पूर्णिमा के दिन हम उनका चिंतन करें और उनकी उस देन को स्मरण करें जो उन्होंने समाज को दी है। विचार करें कि वह क्या चाहते थे? क्या वह चाह हमने पूरी की है और यदि नहीं की है तो उसे पूरी करने के लिए हम संकल्प करें। यही गुरु पूर्णिमा को सच्चे अर्थ में मनाना होगा। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

संघ रूपी...

संघ भी हमको यही संदेश दे रहा है कि यदि हम चाहते हैं कि लोग हमारा भी उसी प्रकार से सम्मान करें जिस प्रकार यज्ञ की भस्म का करते हैं तो उसके लिए हमको भी समर्पण करना पड़ेगा, अपने अहंकार को नष्ट करना पड़ेगा। हमारे महापुरूषों को हम प्रणाम करते हैं, उनकी जयंतियां मनाते हैं, उन्हें स्मरण करते हैं तो इसके पीछे भी यही कारण है कि उन्होंने अपने अहंकार को तिरोहित करके, अपने आप को मिटाकर समाज को बनाने का काम किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे ही महापुरुषों के निर्माण की एक परंपरा है। केवल महापुरुषों की जयंतियां मनाने से कोई महापुरुष नहीं बनता। जब तक हम उनकी तरह कर्म करना प्रारंभ नहीं करते तब तक हम महापुरुषों की वह परंपरा बनाए नहीं रख पाएंगे और क्षत्रिय के रूप में हमारा अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा। ऐसा न हो, इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ यह साधना कर रहा है और तप के बिना कोई भी साधना नहीं की जा सकती। इसीलिए उस तप का अभ्यास कराने के लिए संघ हमें यहां लाया है। संघप्रमुख श्री के संचालन में इस शिविर में चित्तौड़गढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, कोटा, बूंदी, उदयपुर, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा आदि जिलों के 75 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा, केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन का आयोजन किया गया जिसमें पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी गई। स्नेहमिलन में चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, जौहर स्मृति संस्थान अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह विजयपुर, लक्ष्मण सिंह खोर, कर्नल रणधीर सिंह बस्सी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मारवाड़ राजपूत सभा की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

(गजेंद्र सिंह शेखावत ने दिया ईडब्ल्यूएस सरलीकरण का भरोसा)

मारवाड़ राजपूत सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह 7 जुलाई को मारवाड़ राजपूत सभा भवन परिसर में आयोजित हुआ। समारोह को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि हम सभी में से जो जहां भी है, जिस स्थिति में भी है, अपनी क्षमतानुसार समाज का सहयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि ईडब्लयूएस सरलीकरण के संबंध में उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से हाल ही में चर्चा की है। इस विषय में आगे पुनः कमेटी में चर्चा होगी व शीघ्र ही सकारात्मक निर्णय होने की पूरी आशा है। एआईसीसी सचिव व राजस्थान के सहप्रभारी वीरेन्द्र सिंह ने कहा कि समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य क्या है, उसे समझें। उन्होंने राव सीहा के बीठू गांव में बने स्मारक के संरक्षण की आवश्यकता जताई और कहा कि मारवाड़ के कण-कण में त्याग व बलिदान की गौरव गाथाएं भरी पड़ी हैं। आज इस इतिहास को सहेजने और उससे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। पूर्व महारानी हेमलता राजे ने कहा कि सेवा व कर्त्तव्य पालन की परंपरा क्षत्रिय धर्म की विरासत है। इस परंपरा का पालन करने वाले राजपूतों की वीर गाथाएं इतिहास में भरी पड़ी हैं। उन्होंने कहा कि सबको साथ लेकर चलें, अकेले नही चलें। सबके हित की सोच रखें। आरटीडीसी के चेयरमेन धर्मेन्द्र राठौड़ ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि मारवाड़ राजपूत सभा हमेशा सामाजिक मुद्दो पर सक्रिय रहती है। हम सभी को अपने कर्त्तव्य का बोध होना चाहिए व उस बोध के अनुसार कर्त्तव्य पथ पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि अच्छे लोगो को राजनीति में आना चाहिए, जिससे वे राष्ट्र निर्माण में सहयोग कर सकें। समाज हित में हम सभी को सर्वसम्मति से कार्य करना चाहिए। राज्य सैनिक कल्याण सलाहकार समिति के अध्यक्ष मानवेन्द्र सिंह जसोल ने कहा कि सभा में महिला प्रतिनिधित्व का प्रावधान रखा जावे ताकि समाज हित में मातृशक्ति का भी योगदान मिल सके। शेरगढ के पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़ ने कहा कि जोधपुर के पूर्व राजपरिवार का हमेशा मारवाड़ की जनता से जुड़ाव रहता है। तारातरा मठ के महंत प्रतापपुरी महाराज, सिवाना विधायक हमीर सिंह भायल, सैनाचार्य अचलानन्द गिरी व मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। पूर्व सांसद डॉ नारायण सिंह माणकलाव, पूर्व विधायक डॉ जालम सिंह रावलोत सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। समारोह में मेघराज सिंह रॉयल, पुष्पेन्द्र सिंह व लाल सिंह को उनकी उपलब्धियों व योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के सदस्यः समारोह में पूर्व महारानी हेमलता राजे द्वारा मारवाड़ राजपूत सभा कार्यकारिणी के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा, उपाध्यक्ष अर्जुन सिंह रुणकिया, महासचिव के वी सिंह चांदरख, कोषाध्यक्ष जितेंद्र सिंह भांडू व सदस्य नवल सिंह छापला, यशपाल सिंह इन्द्रोका, हितेन्द्र पाल सिंह बुचेटी, गोविंद सिंह प्यावा, ओम करण सिंह मुंजासर, विक्रम सिंह गोपालसर, श्रवण सिंह बारू, सवाई सिंह गोलिया मगरा, लादू सिंह उण्डू, योगेंद्र सिंह खेतासर सहित जोधपुर, नागौर, पाली, जालौर, बाड़मेर जिले व पोकरण उपखंड के प्रतिनिधियों को शपथ दिलाई गई। सभा के मुख्य संरक्षक द्वारा मनोनीत सदस्य कल्याण सिंह राठौड़ व किशन सिंह भाटी को भी शपथ दिलाई। महासचिव के वी सिह चांदरख ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन रतन सिंह चाम्पावत ने किया।

अनुभव से ही समझ में आता है गीता का गूढ़ ज्ञानः संरक्षक श्री

मैंने अड़गड़ानंद जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त किया और उससे गीता का सार जो अनुभव रूप में मुझे प्राप्त हुआ वह इतना गूढ़ है कि बताने से समझ में नहीं आता। इसे केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। अड़गड़ानंद जी महाराज के पास मैं 2005 में गया और पहले ही दिन वहां मुझे लगा कि मैं जिसको ढूंढ रहा हूं, वो यही है और उसके बाद में कभी पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं रही। मन में उथल-पुथल होती है तो भी मन को रस्सी बनाकर गुरु के चरणों में डालने से सारी शंकाएं अपने आप समाधान हो जाती हैं। सबसे अच्छी बात गीता में जो बताई गई है, वह है कि इसमें भगवान ने पूर्ण आश्वासन दिया है हमको कि यदि आप दो कदम भी चल लिए तो अब आपकी यात्रा रुकेगी नहीं। कोई विघ्न पड़ सकता है लेकिन आपका रिजर्वेशन हो गया है। बस जो बताया जाए, वह करते रहें। उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने संघशक्ति (जयपुर) में आयोजित सात दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय भगवद गीता सम्मेलन के अंतिम दिन 1 जुलाई को उपस्थित श्रोताओं से कही। उन्होंने कहा कि जो गुरु के अनुग्रह से हमको मिलता है, वह आग्रह से नहीं मिलता। जो स्वतः ही प्रदान किया जाता है, वही हमारे लिए जीवन का सार बन जाता है। गीता की विशद व्याख्या हमने यहां सुनी, हम बड़े भाग्यवान हैं। निश्चित रूप से पिछले जन्मों में हमने कुछ अच्छे काम किए होंगे जिसका फल हमको यहां मिला है। बहुत सारे लोग हैं जो आ सकते थे पर नहीं आ पाए। बिना संयोग के ऐसा अवसर मिलना संभव नहीं हो पाता। ईश्वर की कृपा से हम आए हैं, तो हम अपना विचार करें। अंतःकरण पर जो अभी तक ताला लगा हुआ था, उस ताले को खोलने की चाबी हमको मिली है गीता के माध्यम से। इसका प्रयोग करके हम अंतर्जगत में प्रवेश कर सकते हैं। जो इस मार्ग पर चलता है, उसको धीरे-धीरे सद्गुरु स्वयं अनुभूति देते हैं। सारी प्रेरणा भगवान गुरु के माध्यम से हमको देते हैं। लाद दे, लदाय दे, गिर जाए उठाई दे - यह गुरु का काम है। गुरु को सदैव ध्यान रहता है कि किसको कितना भार दिया जाना चाहिए। यह कितना बोझा उठा सकता है? लेकिन यदि बोझा किसी को अधिक लग रहा है तो वह गिर जाएगा। ऐसे में गुरु के माध्यम से भगवान उसको उठाते हैं। 25 जून से 1 जुलाई तक आयोजित गीता सम्मेलन के दौरान स्वामी प्रज्ञानंद सरस्वती द्वारा प्रतिदिन गीता के विभिन्न अध्यायों की व्याख्या करते हुए स्वधर्म, योग, कर्म, ज्ञान, भक्ति, श्रद्धा आदि विषयों को समझाया गया।

गोचर-ओरण भूमि के संरक्षण हेतु परिक्रमा का आयोजन

जोधपुर में कोलू पाबूजी स्थित लोकदेवता पाबूजी राठौड़ के मंदिर से 25 किमी लंबी ओरण परिक्रमा का आयोजन 27 जून को किया गया। क्षेत्र की हजारों बीघा गोचर-ओरण भूमि के संरक्षण के संकल्प के साथ निकाली गई इस शोभायात्रा में आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। पाबूजी राठौड़ के मंदिर से सैकड़ों वाहनों के साथ अखण्ड ज्योत रवाना हुई। सबसे आगे अश्व का जोड़ा और उसके पीछे वाहनों में सवार श्रद्धालुओं का ग्रामीणों की ओर से जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। परिक्रमा के पश्चात महाआरती की गई तथा महाप्रसादी का वितरण किया गया। मातृशक्ति द्वारा भजन-कीर्तन भी किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निम्बाराम ने पर्यावरण संरक्षण और ओरण-गोचर भूमि को बचाने के लिए इस तरह के जन-जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता बताई। इस दौरान पूर्व सरपंच तुलछीसिंह, जिला प्रचारक पीयूष कुमार, प्रधान सिमरथाराम मेघवाल, संयोजक जुगत सिंह करणोत, मंहत प्रताप पुरी, प्रभू सिंह बुड़किया, सरपंच लूणसिंह, सरपंच देचू भवानी सिंह, मनरूप पालीवाल, बजरंग सिंह राजपुरोहित सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाषः 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org